बाड़मेर : परिचय व जैव विविधता

- बाड़मेर जिला राजस्थान में 24° 58' से 26° 32' उत्तरी अंक्षाश और 70° 05' से 72° 52' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 28387 वर्ग किमी. है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से यह राज्य में दूसरा सबसे बड़ा जिला है। 599.96 वर्ग किमी. वन क्षेत्र है, जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का 2.11 प्रतिशत है। जिले में 1522.4 वर्ग किमी. गोचर एवं 464.15 वर्ग किमी. क्षेत्र में ओरण भूमि है। जिले का औसतन तापक्रम 0.2° से 48° से. व वर्षा लगभग 336.5 मिमी. है। जिले में से होकर बहने वाली एकमात्र बरसाती नदी लूनी है।
- बाड़मेर जिले की वनस्पति यहां की भौगोलिक परिस्थितियों एवं जलवायु के अनुरूप अत्यन्त विरल एवं परिभाषित अवस्था में हैं। वन "ड्राई ट्रोपिकल फोरेस्ट तथा ट्रोपिकल थोर्न फोरेस्ट" की श्रेणी में आते हैं एवं औसत घनत्व 0.4 से कम है। रोहिड़ा, खेजड़ी, जाल, कुमठा, गूगल एवं देसी बबूल प्रमुख वृक्ष प्रजातियां हैं। कैर, झाड़ी बेर, सणियां, खींप, चुई एवं फोग की झाड़ियाँ लगभग सभी जगह पायी जाती है। जैव विविधता की दृष्टि से यहां 57 प्रजातियों के पेड़, 55 प्रजातियों के पौधे व झाड़ीयाँ एवं लताएं 16 प्रकार की व 41 घास की प्रजातियां पाई जाती हैं।
- जिले में स्तनधारी वर्ग के 16 : पक्षी वर्ग के 23 एवं सरीसृप वर्ग के 18 वन्य जीव पाये जाते हैं। वन्य जीव विविधता के कारण जिले का लगभग 1217 वर्ग किमी. क्षेत्र 'डेजर्ट नेशनल पार्क' अभ्यारणय के अधीन आता है।
- वर्ष 1976 में राष्ट्रीय कृषि आयोग ने इस क्षेत्र की वनस्पति एवं वन्य जीवों को संरक्षण प्रदान करने के लिए इस क्षेत्र में एक बायोस्फीयर रिजर्व (Biosphere Reserve) की स्थापना पर जोर दिया, उसका प्रमुख उद्देश्य मरुस्थलीय पर्यावरणीय संतुलन को इसके प्राकृतिक स्वरूप में बनाए रखना था।
- मुख्य खाद्य फसलों में बाजरा, मोठ, तिल, जीरा, गेहूं, इसबगोल, सरसों आदि शामिल हैं। फलों में आंवला एवं बेर होते हैं।
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की आबादी 26,04,453 है।
- पशुधन बाड़मेर जिले की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है, अधिकांश ग्रामीण भेड़ पालन का व्यवसाय करते हैं। जिले में पशुधन गणना 2007 के अनुसार भेड़ - 10,67,210 ; भैंस एवं भैंसे - 1,30,863 ; बकरियाँ - 14,60,772 ; गाय, बैल - 5,37,242 तथा ऊंट - 69,712 हैं।
- बाड़मेर जिले में तेल एवं गैस के प्रचुर भण्डार हैं। मरुस्थलीय परिस्थितियों में चलने वाली तेज हवाओं के कारण इस वायु वेग को बिजली उत्पादन हेतु विन्ड मिलों की स्थापना की गई है। सोलर एनर्जी प्लांट लगाये जाने प्रस्तावित हैं।
- हरित राजस्थान कार्यक्रम, राजस्थान वानिकी एवं जैव-विविधता परियोजना एवं मनरेगा आदि परियोजनाएं जैव विविधता संरक्षण प्रदान करने हेतु चलाई जा रही हैं।
- गोंद उत्पादन हेतु गूगल, कुमठा व देशी बबूल जैसी प्रजातियाँ हैं। कैर, सांगरी, कूमठा बीज आदि प्रजातियाँ स्थानीय रूप में तैयार की जाने वाली 'पंचकुटा' की सब्जी हेतु कच्चे माल के रूप में प्रयोग में लायी जाती हैं। वज्रदंती, शंखपुष्पी, इसबगोल, अरण्डी, सोनामुखी, ग्वार-पाठा एवं अश्वगंधा जैसी औषधीय प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

बोर्ड की गतिविधियाँ

(जैव विविधता अधिनियम, 2002 की धारा 22 के प्रावधानानुसार, राजस्थान सरकार द्वारा राज्यादेश क्रमांक प.4(8) वन/2005/पार्ट-1 जयपुर, दिनांक 14 सितम्बर, 2010 से राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड की स्थापना की गई।)

❊ अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस समारोह का आयोजन

❊ जैव विविधता विषयक सामग्री का प्रकाशन

❊ कार्यशाला, प्रशिक्षण शिविर, इको-क्लब/ बी.एम.सी. सदस्यों का भ्रमण आयोजन

❊ जैव विविधता प्रबंध समितियों का गठन व लोक जैव विविधता पंजिका तैयार करना

❊ जैविक संसाधनों का संरक्षण
❊ जैव विविधता विरासतीय स्थलों का चयन एवं अधिसूचित
❊ जैव सम्पदा के व्यवसायिक उपयोग का स्टेटस सर्वे
❊ प्रोत्साहन वर्धन

माता भूमिः पुत्रोऽह पृथिव्याः:

भूमि माता है, समस्त जीव इसके अवयव हैं, हम पृथ्वी पुत्र हैं। इसका संरक्षण, संवर्धन व सतत् उपयोग करना हमारी कर्तव्य परायणता है।

जैव विविधता : बाड़मेर

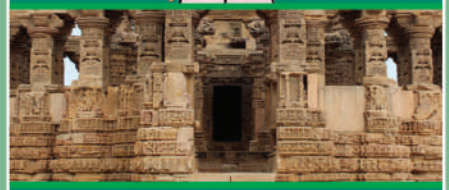

राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड

7, द्वारिकापुरी, जमना लाल बजाज मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर

जैव विविधता

पृथ्वी पर पाये जाने वाले जीवन के पृथक-पृथक रूप ही जैव विविधता है। समृद्ध जैव विविधता बहुत कुछ प्रदान करती है, यथा भोजन, औषधियां, वस्त्र, आवास, आमोद-प्रमोद के साधन, सांस्कृतिक, शोध के अवसर, उद्योगों के लिये कच्चा माल और बहुत कुछ।

बाड़मेर की समृद्ध जैव विविधता

आवास

औषधियाँ

उद्योग के लिए कच्चा माल

भोज्य पदार्थ

सांस्कृतिक

आमोद-प्रमोद

सब कुछ देती जैव विविधता। सतत् उपयोग से बनी रहेगी समरसता।।
अत: जैव विविधता संरक्षण हेतु हम आज ही शपथ लेवें।

जैव विविधता पर बढ़ते संकट

- आनुवंशिक विविधता में कमी व निम्नीकरण

लुप्त प्रजाति

प्रजाति में होता क्षरण

- आवास विखंडन

- प्राकृतिक संसाधनों का अति उपभोग

- विदेशी प्रजातियों का प्रसार

- जलवायु परिवर्तन

- मरुस्थलीय प्रसार

- भूउपयोग परिवर्तन

- विकास परियोजना का प्रभाव

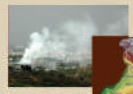

70% भूभाग का जैव विविधता सर्वेक्षण ही हुआ है 46000 पादप व 89000 जन्य प्रजातियों का पता लगा है, लगभग 4 लाख प्रजातियां हैं।

- प्राकृतिक आपदा

- जैव विविधता सूचना का अभाव

आओ हम सब, हमारे व आने वाली पीढियों के लिये,
जैव विविधता का संरक्षण, संवर्धन व सतत उपयोग करें।

जैव विविधता संरक्षण व सुधार के उपाय

स्थानिक प्रजातियों को बढ़ावा देना

विदेशी प्रजातियों का उन्मूलन

जैविक खाद व कीटनाशक का प्रयोग

जैविक संघटकों का सतत उपयोग

अक्षय ऊर्जा का उपयोग

वन्य जीवों का संरक्षण

वनों का संरक्षण

जैव विविधता सूचना का प्रत्येक स्तर पर संकलन करना

अब भी समय है, हम हमारी जैव विविधता को संकट मुक्त कर
आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित करें।